विषय – अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : *पृ० सं० (I - XI)*

अध्याय : एक – भूमिका : विभिन्न भारतीय दर्शनों में आत्मा की अवधारणा – पृ० सं० (1 – 37)

मानव का वास्तविक स्वरुप एवं लक्ष्य–1, भारतीय चिन्तन परम्परा में आत्मा–7, वेद मत में आत्मा–8, उपनिषदों में आत्मा का स्वरुप व स्थिति–9, भगवद्गीता के मत में आत्मा–13, सांख्य–योग का पुरूषात्मवाद–16, न्याय – वैशेषिक मत में आत्मा–19, मीमांसा मत में आत्मा–22, वेदान्ती चिन्तन परम्परा में आत्मा–23, अवैदिक चिन्तन परम्परा में आत्मा–29, संदर्भ – सूची–32.

अध्याय : दो – जैन दर्शन में आत्मा का स्वरूप – *पृ० सं० (38 – 77)*

जैन मत में जीव–द्रव्य या आत्म–तत्व–40, आत्मा की अनेकता व उसके प्रकार –43, संसारी एवं मुक्त अथवा अशुद्ध एवं शुद्ध आत्माएँ –45, चैतन्य गुण के आधार पर संसारी आत्मा के भेद–46, शुद्धि एवं अशुद्धि के आधार पर संसारी आत्मा के भेद–47, मानसिक आधार पर संसारी आत्मा के भेद–47, इन्द्रियों के आधार पर संसारी आत्मा के भेद–48, गति के आधार पर संसारी आत्मा के भेद–50, आध्यात्म के आधार पर संसारी आत्मा के भेद–52, जीव या आत्मा का स्वरूप–54, निश्चय–नय के आधार पर आत्मा का स्वरूप –54, व्यवहार–नय के आधार पर आत्मा का स्वरूप –57, आत्मा का उपयोग स्वरूप–58, जीव का परिमाण–60, आत्मास्तित्व–सिद्धि हेतु प्रमाण–63, संदर्भ – सूची–69,

अध्याय : तीन – बौद्ध दर्शन में आत्मा सम्बन्धी अवधारणा – *पृ० सं० (78 – 114)*

अनात्मवाद की पृष्ठ भूमि–78, अनात्मवाद या नैरात्मवाद–81, पुद्गल नैरात्म्यवाद–86, पुद्गलास्तिवाद–89, त्रैकालिक धर्मवाद और वर्तमानिक धर्मवाद–91, धर्मनैरात्म्य–निःस्वभाव या शून्यवाद–92, विज्ञप्तिमात्रतावाद–93, पन्च स्कंध अथवा नाम – रूप–95, व्यक्तित्व की

संरचना एवं क्षणभंगवाद–98, अनात्मवाद एवं निर्वाण–103, अनात्मवाद का भावात्मक एवं निषेधात्मक पक्ष –105, संदर्भ –सूची–109,

अध्याय : चार – जैन दर्शन में आत्मा एवं कर्म –पुर्नजन्म सम्बन्धी मत – पृ0 सं0 (115– 154)

कर्म का अर्थ एवं परिभाषा–116, नोकर्म अथवा अकर्म –118, कर्म सिद्धान्त की मूल मान्यताएँ –119, कर्म का स्वरूप व आत्मा से सम्बन्ध –120, कर्म एवं पुनर्जन्म– प्रक्रिया–125, स्वभाव एवं शक्ति के आधार पर जैन दर्शन में कर्म के भेद –129, ज्ञानावरणीय कर्म–132, दर्शनवरणीय कर्म –133, वेदनीय कर्म –134, मोहनीय कर्म–135, आयु कर्म–136, नाम कर्म–137, गोत्र कर्म –137, अन्तराय कर्म–138, घाती एवं अघाती के आधार पर कर्म के भेद–138, शुभ एवं अशुभ के आधार पर कर्म के भेद–139, कर्म की विविध अवस्थाएँ –139, कर्म एव उसका विपाक–141, कर्म के अस्तित्व की मूर्त रूप में सिद्धि –144, संदर्भ–सूची–146,

अध्याय : पाँच – बौद्ध दर्शन में आत्मा एवं कर्म–पुनर्जन्म सम्बन्धी मत – पृ0 सं0 (155– 184)

बौद्ध मत में कर्म का अर्थ–156, कर्म का स्वरूप एवं प्रकार–158, शुभाशुभ की कसौटी और शुद्ध –160, बौद्ध मत में कर्म–अकर्म विचार–162, आत्मा, कर्म एवं कर्म–विपाक–164, कर्म की अवस्था और नियतता–166, कर्म एवं पुनर्जन्म प्रक्रिया–169, प्रतीत्यसमुत्पाद अथवा भवचक्र[48] –171, (1) अविद्या–172, (2) संस्कार–173, (3) विज्ञान–173, (4) नाम–रूप–174, (5) षडायतन–174, (6) स्पर्श–174, (7) वेदना–175, (8) तृष्णा–175, (9) उपादान–176, (10) भव–176, (11) जाति–176, (12) जरामरण–177, संदर्भ – सूची–180,

अध्याय : छः – जैन दर्शन में आत्मा एवं बन्धन–मोक्ष – पृ0 सं0 (185– 229)

बन्धन का अर्थ व स्वरूप–185, बन्धन के प्रकार–187, द्रव्य बन्ध एवं भाव बन्ध–187, बन्धन के अन्य भेद–प्रभेद–188, प्रकृति बन्ध–189, स्थिति बन्ध–189, अनुभाग बन्ध या अनुभव बन्ध–190, प्रदेश बन्ध–191, जीव के बन्धन का कारण–192, आस्रव–192, मिथ्यादर्शन–194, अविरति या असंयम–194, प्रमाद –194, कषाय –195, योग–195, जैन दर्शन का मोक्ष सम्बन्धी मत–196, मोक्ष सम्बन्धी तीन दुष्टिकोण –198, संवर–199, संवर के कारण–200, निर्जरा एवं उसके प्रकार–203, जैन दर्शन में त्रिविध साधना मार्ग अथवा समत्वयोग –205, पंच महाव्रत अथवा श्रमणधर्म–210, गुण स्थान अथवा आत्मा का आध्यात्मिक विकास –213, मुक्ति के दो रूप–218, संदर्भ –सूची–220,

अध्याय : सात – बौद्ध दर्शन में बन्धन एवं मोक्ष – *पृ0 सं0 (230– 272)*

बौद्ध मत में बन्धन यां दुःख का स्वरूप –232, दुःख के तीन भेद–236, बन्धन या दुःख का कारण–237, अविद्या एवं आस्रव (आसव)–241, निर्वाण का अर्थ व स्वरूप–244, हीनयान मत में निर्वाण–247, वैभाषिक मत में निर्वाण–248, सौत्रान्तिक मत में निर्वाण –250, योगाचार मत में निर्वाण–251, माध्यमिक मत में निर्वाण –253, अर्हत एवं बोधिसत्व के आदर्श–254, बन्धन से मुक्ति का मार्ग –257, 1. सम्यक् दृष्टि–257, 2. सम्यक् संकल्प –258, 3. सम्यक् वाक्–259, 4. सम्यक् कर्मान्त–259, 5. सम्यक् आजीव–259, 6. सम्यक् व्यायाम–260, 7. सम्यक् स्मृति–260, 8. सम्यक् समाधि–261, शील–262, समाधि–263, प्रज्ञा–265, बौद्ध मत में संवर एवं निर्जरा–266, संदर्भ – सूची–266,

अध्याय : आठ – विभिन्न दार्शनिक मतों के साथ जैन एवं बौद्ध की आत्मा सम्बन्धी मतों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उपसंहार – *पृ0 सं0 (273 – 309)*

तुलनात्मक दृष्टिकोण –273, जैन एवं बौद्ध दर्शन में आत्मा सम्मत समता एवं विषमता–279, जैन एवं अन्य भारतीय आत्मवादी मत–289, समीक्षात्मक दृष्टिकोण–295, उपसंहार–302, संदर्भ – सूची–307,

संदर्भ –ग्रन्थ–सूची – *पृ0 सं0 (310 – 331)*